



# Atal Bhujal Yojana Haryana

## 5th Event Training



# कपास

कपास की खेती नगदी फसल के रूप में होती है. इसकी खेती से किसानों को अच्छा मुनाफा मिलता है इसका उपयोग कपड़ा बनाने में ज्यादा किया जाता है. इसके बीज से तेल भी निकाला जाता है, बचा भाग पशुओं को खिलाया जाता है. खास बात है.

## उपयुक्त जलवायु

शुरुआत में न्यूनतम 16 डिग्री सेन्टीग्रेट तापमान होना चाहिए, तो वहीं फसल बढ़वार के समय लगभग 21 से 27 डिग्री सेन्टीग्रेट तापमान अच्छा माना जाता है.

## मिट्टी

बलुई, क्षारीय, कंकड़युक्त और जलभराव वाली भूमियां उपयुक्त रहती हैं



# कपास

## बीज रोपाई का समय

रुपाई अप्रैल से मई के बीच कर सकते हैं. इससे फसल को पकने का वक्त मिल जाता है. अगर सिंचाई की उचित व्यवस्था नहीं है, तो उस खेत को तैयार करना पड़ता है. जब पहली बारिश हो, तब खेत में उर्वरक डालकर तुरंत बीजों की रोपाई कर देना चाहिए.

## कपास की सिंचाई

इसकी खेती में कम पानी की ज़रूरत पड़ती हैं. अगर बारिश ज्यादा होती है, तो इसे शुरुआती सिंचाई की ज़रूरत नहीं पड़ती, लेकिन अगर बारिश न हो, तो इसकी पहली सिंचाई लगभग 45 से 50 दिन बाद या पत्तियां मुरझाने पर कर देनी चाहिए.

### सिंचाई विधि

- 1 खुला पानी विधि
- 2 मिनी फवारा विधि
- 3 टपका विधि

# कपास

## खुला पानी विधि

- इस विधि का उपयोग पुराने समय में किया जाता था क्योंकि उस वक्त वाटर लेवल उपर था
- इस विधि से हम कापस की खेती करते ह तो इक किले को भिगने में 18 घंटे समय लागता है.

## खुले पानी विधि से होने वाली हानी

- पानी का अधिक खर्च होता है.
- खेत में खरपतवार की संख्या में इजाफा होता है.
- खेत में मिटी का कटाव होता है.
- जड ग्लन की समस्या होती है.



## मिनी फवारा विधि

- मिनी फवारा विधि एक आधुनिक तकनीक है इस विधि का उपयोग काम पानी वाले क्षेत्र में किया जाता है क्योंकि इस विधि से कम पानी में अधिक फसल की जा सकती है.

## मिनी फवारा विधि के लाभ

- इस विधि से कापस के खेत को भिगने में 9 से 10 घंटे का समय लागता है.
- पानी की बचत होती है.
- इस विधि से नेनो युरिया का छिडकाव भी किया जा सकता है.
- इस विधि में पौधों को उचित मात्रा में पानी प्राप्त होता है
- पैदावार में बढ़ोतरी होती है.

## ➤ नोट.

- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना दिशा निर्देश 2018-2019 के मुताबिक, किसान को खेत में एमआई (स्प्रिंकलर) की स्थापना के लिए 15 प्रतिशत राशि और जीएसटी का भुगतान करना होगा. इसके साथ ही उसे 85 प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी.



# कपास

6

## टपका विधि

सिंचाई की यह तकनीक उन क्षेत्रों के लिए काफी उपयुक्त मानी जा रही है, जहाँ जल की कमी तथा जमीन असमतल और सिंचाई प्रक्रिया काफी खर्चीली होती है।

इस विधि में जल का उपयोग मंद गती के साथ बुंद बुंद करके फसल के जड क्षेत्र में किया जाता है

### टपका विधि के लाभ

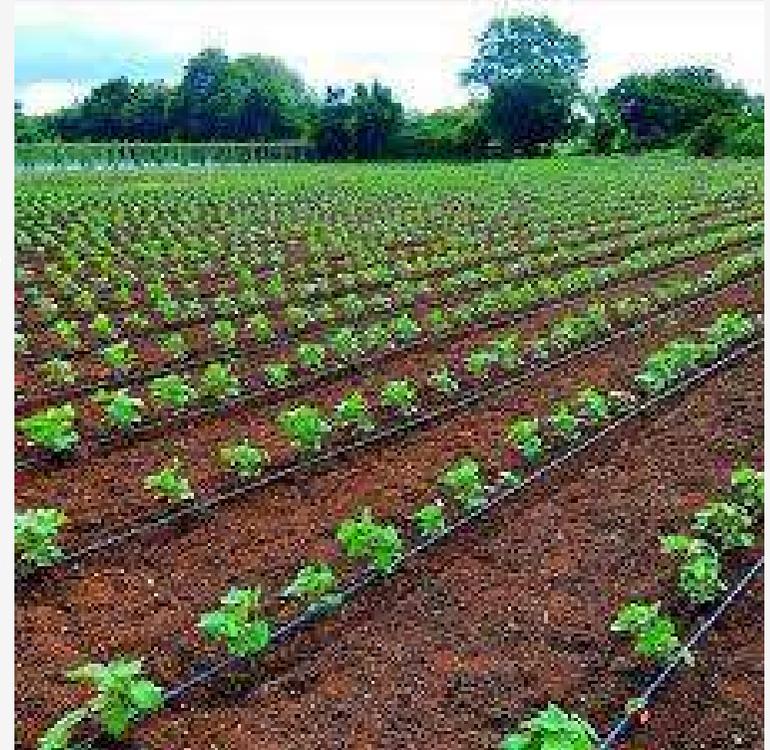
- इस सिंचाई का सबसे अच्छा फ़ायदा यह है कि इस विधि का इस्तेमाल कर लवणीय, बलुई एवं पहाड़ी भूमि में भी सफलतापूर्वक खेती को किया जा सकता है
- टपक सिंचाई में पारम्परिक सिंचाई की तुलना में 70% जल की बचत होती है
- इस विधि से कापस के खेत को भिगणे में 6 से 7 घंटे का समय लगता है
- इस सिंचाई विधि से कपास की फसल की तीव्र वृद्धि होती है फलस्वरूप फसल शीघ्र परिपक्व होती है।



# कपास

## टपका विधि के लाभ

- यह खरपतवार नियंत्रण पर अत्यंत ही सहायक होती है, क्योंकि सिमित सतह नमी के चलते खर-पतवार कम उगते हैं
- इस सिंचाई विधि से जल के भूमिगत रिसाव एवं सतह बहाव से हानि नहीं होती है।
- टपक सिंचाई में अन्य सिंचाई विधियों की तुलना में जल अमल दक्षता (water application efficiency) अधिक होती है
- सिंचाई के लिए इस्तेमाल होने वाले पानी को 55% तक कम कर देता है
- इस सिंचाई विधि को रात्रि पहर में भी उपयोग में लाया जा सकता है
- टपक सिंचाई में जल से फैलने वाली पादप रोगों के फैलने की सम्भावना कम होती है
- टपक सिंचाई विधि अच्छी फसल विकास हेतु आदर्श मृदा नमी स्तर प्रदान करती है।
- कपास की फसल में ड्रिप सिंचाई प्रणाली द्वारा कपास के साथ उर्वरकों से प्रति हेक्टेयर 60 किलोग्राम नाइट्रोजन उर्वरक की बचत होती है
- इस विधि से नेनो युरिया का छिडकाव भी किया जा सकता है.



# सिंचाई प्रणाली पर वीडियो

8

- <https://youtu.be/-hepgtZVUf0>
- <https://youtu.be/sUMz6ip47S0>
- <https://youtu.be/jmyAKUb3IIU>
- <https://youtu.be/iqD-i8hfcLA>
- नोट.
- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना दिशा निर्देश 2018-2019 के मुताबिक, किसान को खेत में एमआई (ड्रिप) की स्थापना के लिए 15 प्रतिशत राशि और जीएसटी का भुगतान करना होगा. इसके साथ ही उसे 85 प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी.

# लेजर लैंड लेवलिंग

> (Laser Land Leveler) को लेजर समतल भी कहा जाता है। यह मशीन किसानों के लिए बेहद उपयोगी है। विशेषकर ऐसे किसानों के लिए जिनके खेत पूर्ण रूप से समतल नहीं हैं। उबड़-खाबड़ हैं। जिससे उन्हें फसल बोन, उर्वरक व पानी देने आदि कार्यों में काफी परेशानी होती है। ऐसे खेतों को खेती लायक बनाने का काम इस लेजर लैंड लेवलर मशीन की सहायता से किया जाता है। इस मशीन का काम भूमि को समतल बनाना है ताकि उस भूमि पर खेती करना आसान हो जाए। लेजर लैंड लेवलर से खेत को समतल बनाया जाता है। इससे फायदा यह होता है कि खेत में खड़ी फसल पर समान रूप से सिंचाई होती है जिससे पानी की बचत होती है। इसके साथ ही खाद और ईंधन की भी बचत होती है।

> लेजर लैंड लेवलर एक विशेष प्रकार का कृषि यंत्र है। यह यंत्र परंपरागत विधियों से एकदम हटकर एक अत्याधुनिक तकनीक से बना हुआ कृषि यंत्र है। इस यंत्र को ट्रैक्टर के साथ जोड़कर चलाना जाता है। इसे ड्राइवर के माध्यम से ट्रैक्टर को ऊंचाई की तरफ से ढाल की दिशा में चलाया जाता है। और बाकी सभी कार्य लेजर लैंड लेवलर के माध्यम से स्वतः किया जाता है। इसका मुख्य काम खेतों की मिट्टी को समतल करना है।



# लेजर लैंड लेवलिंग

10

## भूमि समतलन के लाभ

- लेजर लेवलर द्वारा भूमि समतल करने से पानी का अधिकतम उपयोग होता है और 40% तक पानी की बचत कर देता है।
- काम को तेजी से किया जा सकता है, और निराई गुड़ाई की लागत को भी कम किया जा सकता है।
- पूरे खेत में पानी की सही से निकास और समान पानी का वितरण।
- जल संसाधनों का आसानी से कुशल उपयोग कर सकते हैं।
- एक समान बीज का जमाव् और फसल की वृद्धि।
- पोषक तत्वों और उर्वरक का एक समान प्रसार होना।
- फसल की पैदावार में करीब 20 से 25 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होती है ।
- इससे खेतों में पानी जमने की समस्या से छुटकारा मिलता है । और जरूरत पडने पर पानी को निकाने में भी आसानी होती है ।
- निराई-गुड़ाई के काम में कम समय लगता है जिससे लागत को कम किया जा सकता है।

# लेजर लैंड लेवलर पर सब्सिडी

लेजर लैंड लेवलर पर सब्सिडी [ Subsidy  
on Laser Land Leveler ]

इसपर सरकार के द्वारा सब्सिडी दी जाती है | किसानों को समय-समय पर राज्यों द्वारा लेजर लैंड लेवलर पर सब्सिडी प्रदान की जाती है | सब्सिडी की दर सभी राज्यों में अलग-अलग होती है | सब्सिडी की और अधिक जानकारी के लिए DBT (Department of Agriculture), कृषि विभाग की आधिकारिक वेबसाइट को चेक करें या तो फिर अनुदान की जानकारी के लिए अपने जिले या ब्लॉकस्तर के कृषि कार्यालय पर संपर्क करें |

# लेजर लैंड लेवेलिंग पर वीडियो:

<https://youtu.be/uxGiTm4afY4>

<https://youtu.be/SLWNqTnjWmc>

<https://www.youtube.com/watch?v=dfIZAeouAGY&t=3s>

## पानी की कमी को पूरा करने के लिए किए जाने वाले उपाय

13



स्प्रिंकलर



ड्रिप सिंचाई



अंडरग्राउंड  
पाइपलाइन



Zero tillage  
की पद्धति

# पानी की कमी को पूरा करने के लिए किए जाने वाले उपाय



चेक डैम



जोहड़ / तालाब की सफाई



रेनवाटर हार्वेस्टिंग



इंजेक्शन वेल



रिचार्ज शाफ्ट



सोखता गड्ढा



खेत तालाब



सामुदायिक तालाब

# जल संरक्षण में व्यवहार परिवर्तन तकनीकें और संचार

- ✓ वर्षा के जल का संग्रह करें: छत, टैंक, तालाब या अन्य संग्रहण साधनों का उपयोग करके बारिश के पानी को संग्रहित करें। इससे जल की बचत होगी और वर्षा जल घरेलू एवं अन्य कार्यों में प्रयोग होने से भूमिगत जल की बचत होगी।
- ✓ दिनचर्या के कार्यों में जैसे स्नान , ब्रश व दाढ़ी बनते समय मग में पानी का उपयोग करें।
- ✓ नहाने के समय निर्धारित समय तक नहाने का प्रयास करें और बाल्टी में पानी का उपयोग करें।
- ✓ घरेलू गमलो में एवं पौधशाला में सूर्योदय से पूर्व पानी दे।
- ✓ फर्श पर बाल्टी में पानी लेकर पौचा लगाये नल्की का प्रयोग न करें ।
- ✓ कृषि में जल संयंत्रों का उपयोग करें: स्प्रिंकलर मिनी स्प्रिंकलर और सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली।



# जल संरक्षण हेतु नारे

जब तक जल सुरक्षित है,  
तब तक कल सुरक्षित है।

AdhuriHasrate.in



**WORLD WATER DAY**

जब न होगा पीने का नीर,  
तब सब करेंगे विचार गंभीर



पानी है जीवन की आस, पानी  
को बचाने का करो प्रयास।



BOOKMARKSTATUS.COM



Hindify.org

है बिक रहा बाजार में जो था  
कभी तालाब में  
पानी है कितना कीमती जा  
पूछ रेगिस्तान में !

जिसे अबतक ना समझे वो  
कहानी हूँ मैं, मुझे बर्बाद मत  
करो पानी हूँ मैं

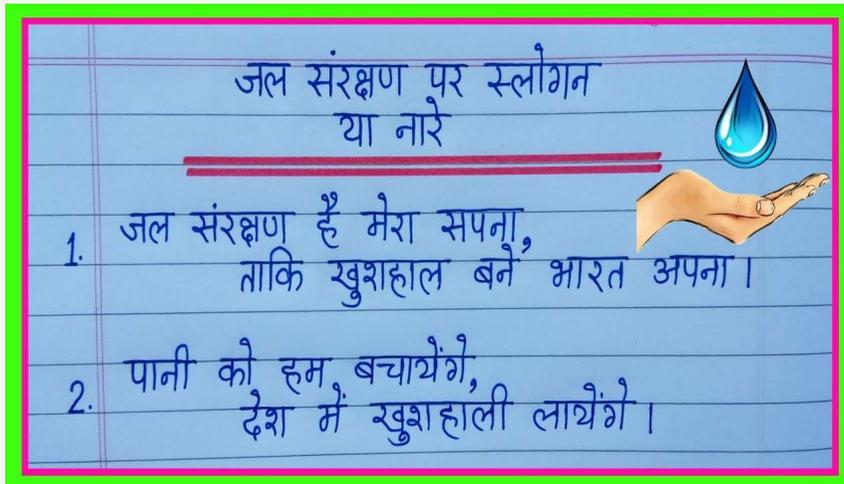
जल है अनमोल,  
इसका नहीं है कोई मोल।

THE  
SIMPLE HELP



# जल संरक्षण हेतु नारे

17



# पानी बचाओ



# जीवन बचाओ

## कृषि की आधुनिक तकनीक और सब्सिडी का लाभ

- ✓ वेबसाइट [www.cadaharyana.nic.in](http://www.cadaharyana.nic.in) पर जाएं। "एमआई के लिए किसान ऑनलाइन आवेदन" पर क्लिक करें
- ✓ मोबाइल नंबर पर ओटीपी भेजा जायेगा। यूजरनेम और पासवर्ड के रूप में मोबाइल नंबर का उपयोग करके लॉगिन करें।
- ✓ अपनी आवश्यकता के अनुसार योजना और उप-श्रेणी का चयन करें।
- ✓ योजना का चयन करने के बाद निम्नलिखित जानकारी भरें।
- ✓ परिवार पंजीकरण सहित व्यक्तिगत जानकारी। भूमि विवरण (फैराड) की प्रति अपलोड करें।
- ✓ बैंक विवरण (बैंक पासबुक की कॉपी अपलोड करें)
- ✓ चुनी गई योजना के अनुसार एमआई परियोजना के घटकों के बारे में विवरण दें। पानी का स्रोत बताओ।
- ✓ जल मार्ग की आवश्यकता के मामले में, नहर का नाम और आउटलेट संख्या चुनें। प्राथमिकता के लिए अंक प्राप्त करने के लिए विवरण दें।

## एमआई के लिए ऑनलाइन आवेदन भरने के लिए एसओपी

- ✓ खेत में बने तालाब के मामले में, टैंक का विवरण, कवरेज क्षेत्र के साथ- साथ देशांतर और अक्षांश का विवरण दें।
- ✓ तालाब एवं उसके उपयोग हेतु भूमि उपलब्ध कराने हेतु सहमति पत्र की प्रति अपलोड करें।
- ✓ ऑन- फार्म एमआई के मामले में, लाभान्वित होने वाले क्षेत्र का चयन करें, पूर्व सब्सिडी का विवरण (यदि कोई हो), स्थापित किए जाने वाले एमआई उपकरण (ड्रिप या स्प्रिंकलर) और पसंदीदा विक्रेता का विवरण।
- ✓ आवेदन को सफलतापूर्वक जमा करने के बाद, सिस्टम आवेदक को विशिष्ट आईडी उत्पन्न करेगा।
- ✓ माइकाडा के अधिकारियों से सत्यापन के बाद, किसान को निर्धारित समय सीमा के भीतर, यदि आवश्यक हो, शेष जानकारी भरने के लिए सूचित किया जाएगा।

# ग्राम पंचायत स्तर पर लगाए जा रहे सन बोर्ड



**तेजी से घट रहे भूजल को बचाने के लिए सहयोग करें**  
**अटल भूजल योजना (अटल जल)**  
**सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, पलवल**



यह चार्ट आपकी ग्राम पंचायत में भूजल स्तर में गिरावट, भूजल की गुणवत्ता तथा कुल वर्षा को दर्शाता है।

**ग्राम पंचायत :** \_\_\_\_\_ **ब्लॉक :** \_\_\_\_\_ **जिला :** \_\_\_\_\_

ग्राम पंचायत का ऐतिहासिक भूजल स्तर (मीटर)

Sr. No.	जलभृत का प्रकार	स्त्रोत	Lat.	Long.	भूजल स्तर											
					2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	2023	2024	2025	2026
<b>जिले का वार्षिक वर्षा का विवरण</b>																
वर्षा (मिलीमीटर)	स्त्रोत	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	2023	2024	2025	2026			
वर्षा के दिनों की संख्या																

Sr. No.	ट्यूब वेल/कुओं का भूजल स्तर						पीजोमीटर का भूजल स्तर					ग्राम पंचायत की मासिक वर्षा का विवरण				
	स्थान	स्त्रोत		Lat.	Long.	स्थान	Lat.	Long.			स्थान	Lat.	Long.			
	मास	2022	2023	2024	2025	2026	2022	2023	2024	2025	2026	2022	2023	2024	2025	2026
1	जनवरी															
2	फरवरी															
3	मार्च															
4	अप्रैल															
5	मई															
6	जून															
7	जुलाई															
8	अगस्त															
9	सितम्बर															
10	अक्टूबर															
11	नवम्बर															
12	दिसम्बर															

**ग्राम पंचायत में मौजूदा जल की गुणवत्ता इस प्रकार है** **वर्ष**

S.No.	किसान का नाम	स्त्रोत	वर्ष	PH	इ.सी (माइक्रो सिमेंट/से.मी.)	टी.डी.एस	कुल कठोरता	कैल्शियम	मैगनीशियम	सोडियम	पोटेशियम	कार्बोनेट	बाइकार्बोनेट	सल्फेट	क्लोराइड	फ्लोराइड	नाइट्रेट
	मानक सीमा			(6.5-8.5)	(0-3100)	(0-2000)	(0-600)	(0-200)	(0-100)	(0-200)	(0-30)	(0-600)	(0-600)	(0-400)	(0-1000)	(0-1.5)	(0-45)
1																	
2																	
3																	
4																	
5																	

**सुझाव/चेतावनी:-**

# ग्राम पंचायत स्तर पर लगाए जा रहे सन बोर्ड चर्चा

- ✓ भूमिगत जल में निरंतर गिरावट के कारण गुणवत्ता में कमी ।
- ✓ गिरते भू जल के कारण खेतों में पैदावार कम हो रही है ,
- ✓ आज एक कदम और बढ़ाओ ,जल बचाने की परम्परा बनाओ।
- ✓ पिछले एक दशक में लगभग दोगुना भूजल का स्तर घटा है।
- ✓ भूमिगत जल को रिचार्ज करने की चिंता और चिन्तन दोनों ही जरूरी और अति आवश्यक है



## वार्षिक वर्षा डेटा

- डीएलआई#1 के तहत डेटा डिस्प्ले।  
(ग्राम पंचायत विशेष का डेटा प्रस्तुत किया जाएगा)

# जल की गुणवत्ता

- ✓ भौतिक गुणवत्ता : जल पूर्णतया रंगहीन, गंधहीन, स्वादयुक्त एवं शीतल होना चाहिये।
- ✓ रासायनिक गुणवत्ता : जल में घुलनशील ऑक्सीजन, पीएच मान तथा खनिजों की मात्रा स्वीकृत सीमा में होनी चाहिये।
- ✓ जैविक गुणवत्ता : जल जनित रोगकारक अशुद्धियों से पूर्णतया मुक्त होना चाहिये।

# घट रहे भूजल स्तर के समाधान के उपाय

- ✓ जल संरक्षण के परंपरागत स्रोतों (जैसे तालाब ,झीलो आदि) का बचाव एवं संरक्षण एवं पुनर्जीवित करने पर बल देना ।
- ✓ जल संरक्षण की दिशा में प्रशिक्षण ,सेमिनार , समूहचर्चा ,कार्यशालाए आदि जैसे जन जागरूकता कार्यक्रमों का नियमित आयोजन ।
- ✓ मिट्टी की जांच करके खेतों में उर्वरकों का सही मात्रा में उपयोग करना चाहिए।
- ✓ घरेलू स्तर पर जल का उचित व संयमित उपयोग एवं उद्द्योगों में पानी का चक्रीय उपयोग अर्थात जल का शोधन करके उसका पुनः उपयोग करे ।
- ✓ निष्पादित प्रदूषणकारी औद्योगिक इकाइयों के लाइसेंसों को रद्द करना चाहिए।

# घट रहे भूजल स्तर के समाधान के उपाय

- ✓ औद्योगिक समूहों को सामान्य प्रवाह उपचार संयंत्रों (ट्रीटमेंट प्लांट) की स्थापना करनी चाहिए।
- ✓ मृदा परीक्षण करके उर्वरकों का सही मात्रा में उपयोग करना चाहिए।
- ✓ निष्पादित प्रदूषणकारी औद्योगिक इकाइयों के लाइसेंसों को रद्द करना चाहिए।

# ग्राम पंचायत स्तर पर लगाए जाने वाले होर्डिंग्स

## सावधान !

आपकी ग्राम पंचायत में अगले 25 वर्षों में भूजल की स्थिति अति गंभीर एवं गुणवत्ता दयनीय स्थिति में हो जाएगी !

ग्राम पंचायत : अकालगढ़, ब्लॉक : जगाधारी, जिला : यमुनानगर

श्री नरेंद्र मोदी

श्री मनोहर लाल

**लेजेंड**

- 0.0-1.5 (गंभीर रूप से जल भरव)
- 1.51-3.0 (संभावित जल भरव)
- 3.01-5.0 (जल जमाव के लिए बचत जोन)
- 5.01-10.0 (भूजल की अच्छी संभावना)
- 10.01-20.0 (संभावित भूजल संकट)
- 20.01-30.0 (मध्यम भूजल संकट)
- 30.01 मीटर और अधिक (गंभीर रूप से भूजल संकट)

\*एम.बी.जी.एन. जमीन स्तर से नीचे मीटर में  
स्रोत : हरियाणा जल संरक्षण प्राधिकरण (HWRA)

वर्ष : 2000

वर्ष : 2010

वर्ष : 2020

### भूजल उपयोग (वर्तमान)

++कुल उपयोग पानी	512.1 एकड़ फुट
++उपयोग किया गया पानी	1619.3 एकड़ फुट
++उपलब्धता से अधिक पानी उपयोग किया गया	-1107.1 एकड़ फुट
*वर्तमान भूजल स्तर (2023)	11.6 फुट
पानी की गुणवत्ता	पानी पीने एवं सिंचाई के लिए उपयुक्त नहीं है। पानी में फ्लोराइड भारतीय मानकों से अधिक है। <b>अत्यधिक दूषित</b>
भू - जल उपयोग के संबंध में ग्राम पंचायत की श्रेणी	धान, गन्ना, गेहूँ
ज्यादा मात्रा में भूजल की खपत करने वाली प्रमुख फ़सलें	

++ स्रोत: जल सुरक्षा योजना वर्ष 2021-22  
भूजल के संकटों का स्रोत: हरियाणा जल संरक्षण प्राधिकरण एवं अटल भूजल योजना हरियाणा

### अटल भूजल योजना के अन्तर्गत गतिविधियां

- समुदाय स्तर जागरूकता
- वर्षा मापन यन्त्र
- जल परीक्षण किट
- जल स्तर संकेतक
- सूक्ष्म सिंचाई विधि
- जल पुनर्भरण निर्माण

### भूजल प्रयोग (प्रस्तावित)

- धान एवं गन्ने की फसल को कम से कम लगाए।
- धान की सीधी बिजाई के साथ साथ भूमियत ड्रिप सिंचाई प्रणाली की अपनाएं।
- धान में बी०एस०आर० का प्रयोग करना (20 से 30 प्रतिशत पानी की बचत)
- गन्ने में ड्रिप सिंचाई प्रणाली को अपनाएं।
- सूक्ष्म सिंचाई विधि को अपनाएं (30 से 40 प्रतिशत पानी की बचत)

**सुझाव**

- फसल विविधीकरण को अपनाएं
- कम पानी की खपत वाली फसलें जैसे बाजरा, ज्वार, सब्जियां एवं फलदार वृक्ष लगायें।
- गेहूँ में शून्य जुताई / हिल्पी सीडर / सुपर सीडिंग पद्धति के साथ साथ स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली को अपनायें।
- फसलों, सब्जियों एवं फलदार वृक्ष में सूक्ष्म सिंचाई (मिनी स्प्रिंकलर / ड्रिप (टपका)) प्रणाली को अपनायें।
- गेहूँ में शून्य जुताई (15 से 20 प्रतिशत पानी की बचत)

डॉ. सतबीर सिंह कादियान, परियोजना निदेशक, अटल भूजल योजना, हरियाणा

सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, हरियाणा

# भूजल संरक्षण के लिए सर्वोत्तम प्रबंधन अभ्यासों को अपनाना

- ✓ भूजल संरक्षण के लिए सर्वोत्तम प्रबंधन अभ्यास उच्च जलस्तर की सुरक्षा, जल संग्रहण और जल संरक्षण को सुनिश्चित करते हैं।
- ✓ वर्षा जल संचयन अभ्यास जल संसाधन की बचत करते हैं और पानी के उपयोग को भविष्य के लिए सुरक्षित बनाते हैं।
- ✓ कृत्रिम पुनर्जल संचयन अभ्यास द्वारा खेती के लिए जल का पुनर्निर्माण किया जा सकता है और सूखे में जल की उपलब्धता को बढ़ाया जा सकता है।



चेक डैम

## वर्षा जल संचयन, कृत्रिम पुनर्जल संचयन और फसल-जल बजट

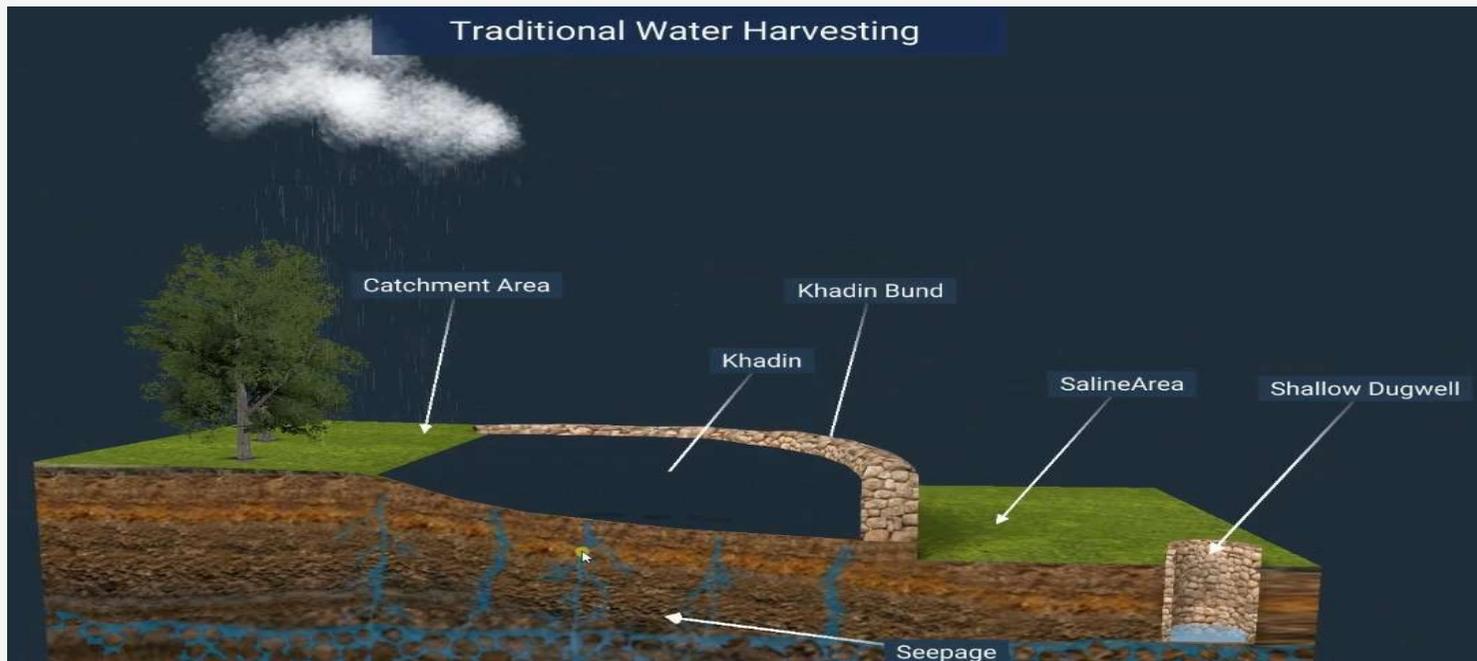
- ✓ फसल-जल बजट अभ्यास द्वारा व्यापक पानी की व्यवस्था करके जल का सही उपयोग किया जा सकता है और पौधों के लिए आवश्यक मात्रा में पानी प्रदान किया जा सकता है।
- ✓ इन अभ्यासों को अपनाने से ग्रामीण क्षेत्रों में जल संसाधन का सुरक्षित और टिकाऊ उपयोग हो सकता है और पर्यावरणीय संतुलन बना रह सकता है।



खेत तालाब

## 29 वर्षा जल संचयन : अभिप्राय

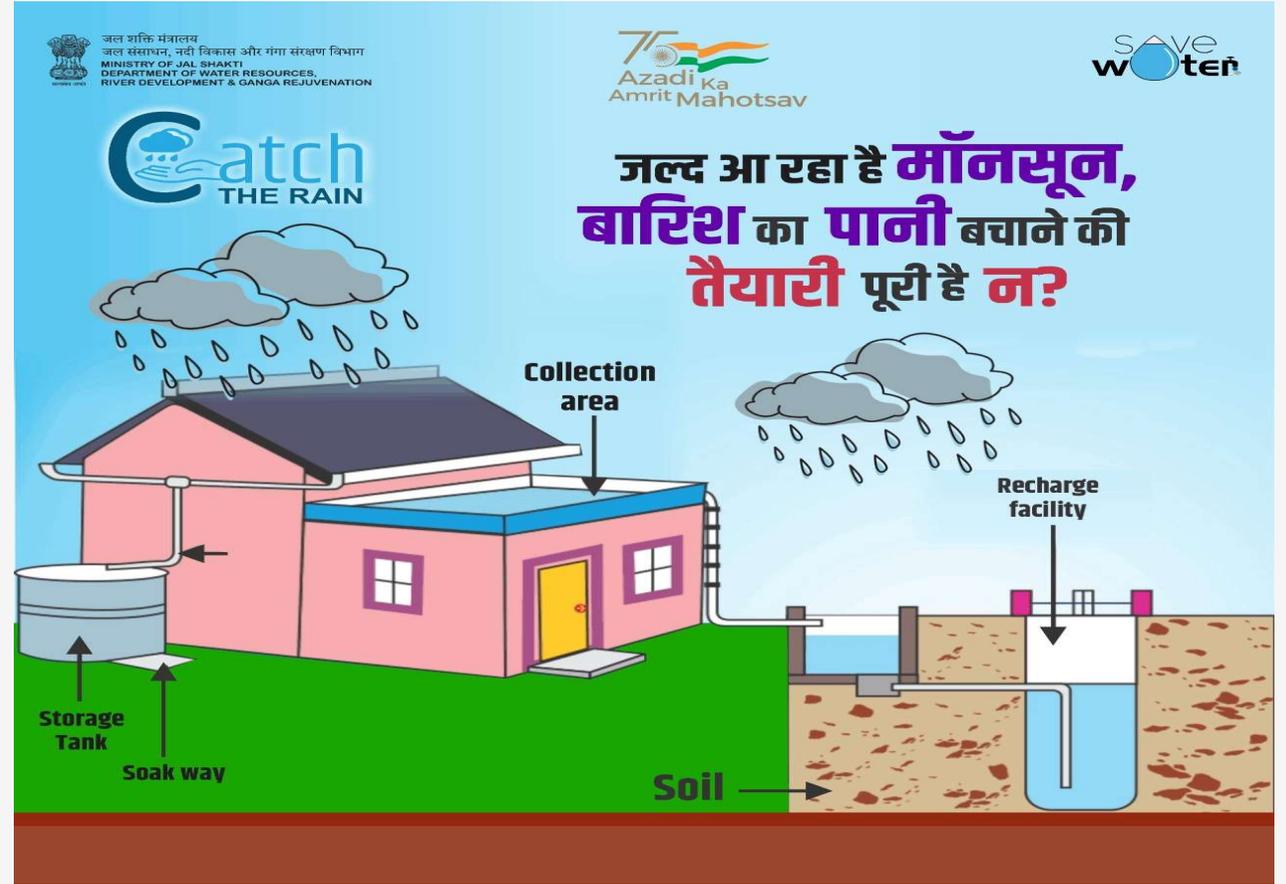
- ✓ वर्षा जल संचयन का अभिप्राय है वर्षा के जल को एकत्र करके कुओं, तालाबों और गड्ढों आदि को फिर से भरकर पानी की समस्या दूर करना।



# घर की छत के वर्षा जल का संचयन कैसे करेंगे?

30

- ✓ घर से थोड़ी दूर पर २ से ३ मीटर गहरा गड्ढा खोदकर, गड्ढे को ईट, कंकड़ और बजरी से भर देते हैं। फिर उसके ऊपर मोटी रेत डालते हैं। इस गड्ढे में छत पर गिरने वाले वर्षा के स्वच्छ जल को इकट्ठा करते हैं। विद्यमान बोर वेल में भी फ़िल्टर के माध्यम से जल डाल सकते हैं।



# वर्षा जल पुनर्भरण से लाभ :

31

- ✓ आवश्यकतानुसार जल की प्राप्ति,
- ✓ जमीन के अन्दर जल मात्रा बढ़ना,
- ✓ जल प्रदूषण कम होना,
- ✓ जल स्तर नीचे न गिरना,
- ✓ मिट्टी का कटाव कम होना व कृषि फसलों को हरा-भरा बनाया जा सकना आदि।



# भूजल प्रबंधन के लिए संस्थाओं की मजबूती की आवश्यकता

संस्थागत मजबूती भूजल प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण है।

- एक मजबूत संगठन भूजल संसाधनों को सुरक्षित और सही ढंग से प्रबंधित करने में सक्षम होता है।
- संगठनों की मजबूती से भूजल प्रबंधन के लिए संसाधनों का सुरक्षित उपयोग और उनकी दुरुस्ती बढ़ती है।
- यह संगठनों को उच्च गुणवत्ता वाले भूजल सेवाएं प्रदान करने की क्षमता प्रदान करती है।
- संस्थागत मजबूती से जल उपलब्धता में सुधार
- बढ़ी हुई आयोजनाओं के लाभ
- सतत भूजल संसाधनों के सकारात्मक परिणाम
- भूजल संसाधनों की सुरक्षा में मजबूती
- लंबी अवधि तक उपयोग की संभावना
- जल सुरक्षितता और सार्वभौमिकता के मानकों को पूरा करना
- नई उपयोग पद्धतियों को प्रोत्साहित करना

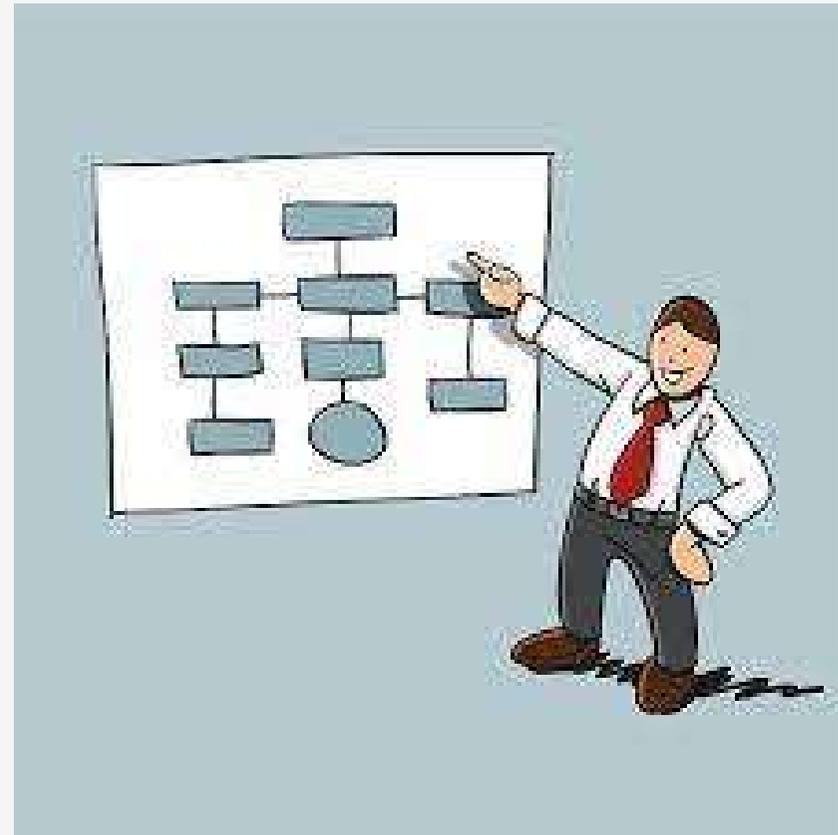


## प्रशिक्षणार्थियों की ग्राम पंचायत में ABY के कार्यान्वयन में सक्रिय भूमिका

- प्रशिक्षणार्थियों को उत्साहित करें, एबीवाई के कार्यान्वयन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए।
- ग्राम पंचायत स्तर पर प्रशिक्षणार्थियों को स्थानीय जनता के साथ संवाद करने का महत्व समझाएं।
- सामुदायिक संगठनों और स्थानीय संगठनों के साथ सहयोग करके प्रशिक्षणार्थियों को बढ़ावा दें
- संगठनात्मक योजनाओं के तहत एबीवाई के संदर्भ में कार्य करने के लिए प्रशिक्षणार्थियों को प्रोत्साहित करें।

# भूजल प्रबंधन के लिए संस्थाओं की मजबूती की आवश्यकता

- संगठनों की मजबूती भूजल संसाधनों की सुरक्षा के साथ-साथ उनकी पुनर्जीविता और संग्रहण क्षमता को भी बढ़ाती है।
- मजबूत संगठन भूजल प्रबंधन की नीतियों और प्रक्रियाओं को संगठित और सुगठित बनाने में सहायता करता है।
- यह संगठनों को संगठनात्मक विकास की ओर प्रेरित करती है और उन्हें भूजल प्रबंधन में नवीनतम और उन्नत तकनीकों का उपयोग करने की क्षमता प्रदान करती है।



## प्रशिक्षणार्थियों की ग्राम पंचायत में ABY के कार्यान्वयन में सक्रिय भूमिका

- सामुदायिक संगठनों और स्थानीय संसाधनों का सहयोग प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षणार्थियों को प्रेरित करें।
- प्रशिक्षणार्थियों को सामुदायिक प्रशासन की महत्वपूर्णता समझाएं और उन्हें संगठनात्मक कार्यों में योगदान करने के लिए प्रेरित करें।



# संपर्क जानकारी:

अधिक जानकारी या सहायता के लिए संपर्क विवरण :

IEC एक्सपर्ट : नाम.....मोबाईल नम्बर:.....सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, .....

GWE एक्सपर्ट: नाम.....मोबाईल नम्बर:.....सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, .....



Thank  
you! 🙏

